

DR. GANGADHAR VITHOBAJI PANTAWANE

Born on 28 June 1937 in Nagpur in Maharashtra, Dr. Gangadhar V. Pantawane, fondly called Pantawane Sir, began writing early in his childhood. He had a humble beginning and faced many hardships to continue his early education. He passed his matriculation in 1956, took B.A. (1960) and M.A. (1962) from Nagpur College, Nagpur.

2. Dr. Pantawane began his professional career, teaching for 15 years in Milind College, Aurangabad, founded by Dr.Babasaheb Ambedkar and later, in Dr.Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad for 20 years, as Professor and Head of the Dept. of Marathi Language and Literature. While teaching, he sincerely made efforts to urge upon the students from the Dalit, tribal and backward classes, to cultivate social, literary, intellectual and research aptitudes. In 1967 he started publishing a literary journal called Asmitadarsh in order to voice and express the realities and sufferings of the community that had remained mute for thousands of years.

3. Dr.Pantawane has regularly been organizing 'Asmitadarsh Sahitya Sammelan' with the sole intention of encouraging new Dalit writers and making the people in rural areas understand Dalit literature and the philosophy of Dr.Babasaheb Ambedkar Mahatma Phule and Rajarshi Shahu Maharaj. Dr.Pantawane is an active member of Sant. Chokhamela Samaj Education Society that was founded in 1922 by a few Dalit social workers with an objective to promote education among girls from the Scheduled class. He is an active member of the executive committee of People's Education Society founded by Dr.Babasaheb Ambedkar in 1945 in order to provide facilities of higher education especially to the Dalits and other deprived classes. In his unrelenting mission of study and research, he has travelled to several universities in the UK and Thailand.

4. Dr. Pantawane's oeuvre includes twenty seven publications comprising literary criticism, research work, biography, life sketches, collections of articles and his various addresses. He also has edited a number of works of literary and cultural significance. He was elected President of the first Marathi Vishwa Sahitya Sammelan to be held in the USA. He has actively contributed on a various committees of Govt. of Maharashtra. He presided as the Chairman of the committee for publication of “Dalit Shabdakosh".

5. Dr. Pantawane is the recipient of many national and international awards including FEI foundation, Bhim Ratna (Ambedkar Centenary Committee, U.K), to name a few.



डॉ. गंगाधर विठोबाजी पानतावणे

डॉ. गंगाधर विठोबाजी पानतावणे का जन्म 28 जून, 1937 को महाराष्ट्र के नागपुर में हुआ। आपको प्यार से पंटावणे सर पुकारा जाता था। आपने बचपन से ही लिखना प्रारंभ कर दिया। आप साधारण परिवार से संबंध रखते हैं तथा अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने में आपको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आपने वर्ष 1956 में अपनी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा नागपुर महाविद्यालय, नागपुर से वर्ष 1960 में बी. ए. और वर्ष 1962 में एम. ए. की डिग्री प्राप्त की।

2. आपने अपने व्यावसायिक करियर की शुरूआत की तथा डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर द्वारा स्थापित मिलिंद कॉलेज, औरंगाबाद में 15 वर्ष तक शिक्षक के रूप में कार्य किया और बाद में मराठी भाषा एवं साहित्य विभाग में प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के रूप में 20 वर्षों तक डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय में सेवा की। अपने शिक्षण काल के दौरान आपने दलित, आदिवासी तथा पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों को अपने अंदर सामाजिक, साहित्यिक, बौद्धिक एवं शोध की अभिवृत्ति विकसित करने के लिए प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य किया। आपने हजारों वर्षों से दलित एवं शोषित समुदाय से जुड़ी वास्तविकताओं तथा उनके द्वारा भोगी गई यातनाओं की अभिव्यक्ति के लिए वर्ष 1967 में अस्मितादर्श नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन करना प्रारंभ किया।

3. आप दलित युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को दलित साहित्य तथा डॉ. बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर, महात्मा फुले तथा राजश्री शाहू महाराज के दर्शनशास्त्र से अवगत करवाने के उद्देश्य से नियमित रूप से 'अस्मितादर्शन साहित्य सम्मेलन' का आयोजन करते हैं। आप कुछ दलित सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा वर्ष 1922 में स्थापित संत चौखामेला समाज एजुकेशन सोसाइटी के सक्रिय सदस्य हैं जिसका उद्देश्य अनुसूचित जाति की लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना है। आप विशेष रूप से दलितों तथा अन्य पिछड़े वर्गों के लोगों को उच्च शिक्षा की सुविधाएं मुहैया करवाने के उद्देश्य से वर्ष 1945 में डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर द्वारा स्थापित पीपल्ज एजुकेशन सोसाइटी की कार्यकारी समिति के सक्रिय सदस्य हैं। अध्ययन एवं अनुसंधान के अपने सतत मिशन के दौरान अनेक विश्वविद्यालयों का भ्रमण किया।

4. आपकी कृतियों में 27 प्रकाशन शामिल हैं जिनमें साहित्यिक समालोचना, शोध कार्य, आत्मकत्था, जीवन चरित्र, लेखों का संग्रह तथा उनके अनेक भाषण सम्मिलित हैं। आपको साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण असख्ंय कृतियों का सम्पादन करने का भी श्रेय प्राप्त है। आपको अमेरिका में आयोजित होने वाले प्रथम मराठी विश्व साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष चुना गया। आपने महाराष्ट्र की विभिन्न सरकारी समितियों में सक्रिय भूमिका निभाई है। आपको "दलित शब्दकोष" के प्रकाशन संबंधी समिति की अध्यक्षता करने का भी गौरव हासिल है।

5. आपको अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिसमें एफ ई आई फाउंडेशन, भीम रत्न (अंबेडकर सेंटीनरी कमेटी, यू के) जैसे पुरस्कार शामिल हैं